स्कूल में भाषा शिक्षक की भूमिका

– दिनेश कर्नाटक

विद्यालय में एक भाषा शिक्षक के रूप में मुझे क्या करना चाहिए? क्या मैं एक अच्छा भाषा शिक्षक हूं? अगर नहीं हूं तो मैं कैसे एक अच्छा भाषा शिक्षक हो सकता हूं?

मैं एक इंटर कॉलेज में हिन्दी का शिक्षक हूं। मैं कई बार अपने से पूछता हूं कि क्या मैं शिक्षक होने के अर्थ को समझता हूं? क्या एक शिक्षक होने के नाते, मैं अपने काम के उद्देश्य को या अपनी भूमिका को सही से समझता हूं? क्या मैं अपनी उस भूमिका को सही से निभा रहा हूं? भाषा का शिक्षा में कोई महत्व भी है या इसे बस यूं ही पढ़ाया जा रहा है? विद्यालय में एक भाषा शिक्षक के रूप में मुझे क्या करना चाहिए? क्या मैं एक अच्छा भाषा शिक्षक हूं ? अगर नहीं हूं तो मैं कैसे एक अच्छा भाषा शिक्षक हो सकता हूं ?

भाषा के बारे में मैं सोचता हूं कि वह मेरे लिए ही नहीं, सभी के लिए वैसे ही आवश्यक है जैसे देखने के लिए आंखें। मानव समाज भाषा के बगैर चल नहीं सकता क्योंकि यह संप्रेषण का सबसे अधिक शुद्ध तथा सार्वभौमिक माध्यम है। हमारे पास अपनी भाषा होने का अर्थ है अपनी स्मृति, कल्पना, ज्ञान तथा सृजन की शक्ति का होना। मेरा दृढ़ विश्वास है कि भाषा पढ़ना तथा सीखना, जीवन को जानने और समझने के लिए अपरिहार्य हैं। स्कूलों में बच्चों को आमतौर पर तीन भाषाएं पढ़ाई जाती हैं। हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत। कुछ स्कूल हिन्दी माध्यम होते हैं। उनमें अंग्रेजी को छोड़कर सभी विषय हिन्दी में पढ़ाए जाते हैं। इसी प्रकार अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में हिन्दी तथा संस्कृत को छोड़कर सब कुछ अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाया जाता है। गैर हिन्दी भाषी राज्यों में पठन–पाठन अन्य भारतीय भाषाओं तथा अंग्रेजी में होता है। स्कूलों में विषयों को लेकर भी उसी तरह की श्रेष्ठता या हीनता का बोध है जैसा हमारे यहां सामाजिक जीवन में है। अंग्रेजी, गणित तथा विज्ञान जैसे विषयों को कठिन होने के कारण अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। हिन्दी, संस्कृत, कला तथा व्यायाम जैसे विषयों को अधिकांश लोग औपचारिकता मात्र समझते हैं। भाषा–साहित्य, कला तथा खेल–कूद जैसे विषय बच्चों का बहुआयामी विकास करने में सहायक होते हैं। उन्हें

सुसंस्कृत तथा मानवीय बनाते हैं। लेकिन इनके प्रति समाज और शिक्षा प्रशासन में बैठे लोगों की उदासीनता के कारण इन विषयों के शिक्षकों में भी उदासीनता आ जाती है, जिसका खामियाजा पूरी पीढ़ी तथा समाज को भुगतना पड़ता है।

सभी विद्यालयों के प्रधानाचार्य यदि यह सुनिश्चित करें कि उनके विद्यालय के सभी भाषा शिक्षक मिल–जुलकर कालेज में भाषा संबंधी गतिविधियों का संचालन करेंगे तथा इसके लिए वे उन्हें जरूरी सहयोग तथा संसाधन उपलब्ध करायें तो बच्चों को इसका काफी लाभ होगा। इन गतिविधियों में बच्चों से कविता, लघुकथा या विचार पोस्टर बनवाना, दीवार–पत्रिका अथवा विद्यालय पत्रिका का नियमित प्रकाशन करवाना, कविता–कहानी या निबंध लेखन, वाद–विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, नाटक, मंचन आदि हो सकती हैं। विद्यालय में नियमित रूप से संचालित होने वाला पुस्तकालय भी भाषा शिक्षण का एक जरूरी पहलू है। इसके संचालन का दायित्व भी भाषा शिक्षकों के पास होना चाहिए। प्रार्थना सभा तथा विद्यालय में आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में भाषा शिक्षकों की सक्रिय भूमिका प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों को भाषा शिक्षण में सहायता करती

है। सैद्धांतिक रूप से भले ही यह सब बहुत आकर्षक लगता हो लेकिन व्यावहारिक रूप से यह सब, कुछ ही विद्यालयों में हो पाता है।

एन.सी.एफ. 2005 के भारतीय भाषाओं के आधार पत्र के अनुसार भाषा शिक्षण का उद्देश्य अब केवल सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने तक सीमित नहीं होना चाहिए। वह भाषा दक्षता के मामले में ज्यादा समग्रतावादी दृष्टिकोण अपनाने की बात करता है। उसके अनुसार शिक्षार्थी को, जो कुछ कहा गया है उसे समझने के लिए, उसमें वक्ता की ओर से आने वाले विभिन्न गैर–शाब्दिक संकेतों को ग्रहण करने की क्षमता होनी चाहिए। समझ के साथ पढ़ने तथा विवेचनात्मक दृष्टिकोण का विकास होना चाहिए। शिक्षार्थी में अपने विचार सहज एवं व्यवस्थित ढंग से प्रकट करने का आत्मविश्वास पैदा होना चाहिए। विद्यालय के विषयों के अतिरिक्त विद्यार्थी को विभिन्न प्रयोजनों में प्रयोग की जाने वाली विभिन्न भाषाओं को समझने और उनके प्रयोग में भी दक्ष होना चाहिए।

भाषा की कक्षा में एक विद्यार्थी को अपनी कल्पना और सृजनात्मकता विकसित करने के लिए पर्याप्त स्थान मिलना चाहिए। बच्चों में अपने देश, समाज, संस्कृति तथा लोगों के प्रति संवेदनशीलता का भाव पैदा होना चाहिए। भाषा की कक्षाएं धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक पूर्वाग्रहों को समाप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। बहुभाषी कक्षाओं को शिक्षा में अवरोध के बजाय संसाधन के तौर पर देखा जाना चाहिए। यदि हम कक्षाओं को महज पढ़ाने की जगह नहीं बल्कि सीखने की जगह के रूप में देखें तो बच्चों के साथ हमारा रिश्ता बेहतर हो जाएगा।

व्याकरण के प्रति अतिरिक्त आग्रह भी भाषा शिक्षकों की एक बड़ी समस्या है। उन्हें लगता है कि उनका काम भाषा की पहरेदारी है। एन.सी.एफ. 2005 में भाषा का आधार पत्र पहले ही पृष्ठ में कहता है–'पर्याप्त अवसर मिले तो बच्चा नयी भाषाओं को आसानी से सीखेगा, शिक्षण का फोकस व्याकरण पर न होकर विषय–वस्तु पर होना चाहिए।'

त्रिभाषा सूत्र को उत्तर भारत में लागू करने हुए यहां के राज्यों का एक आश्चर्यजनक रवैया सामने आया। लगभग सभी उत्तर भारतीय राज्यों ने किसी दक्षिण भारतीय भाषा का चयन करने की जगह 'संस्कृत' को चुना। न जाने किस कारण ऐसा किया गया। उत्तर भारतीय राज्यों द्वारा भाषा के इस 'चुनाव' का दक्षिण भारतीय राज्यों के मानस पर क्या प्रभाव पड़ा होगा – कहना मुश्किल है। इतना अनुमान तो लगाया ही जा सकता है कि उन्होंने कोई आत्मीयता अनुभव नहीं की होगी। अनेक संस्कृत प्रेमियों और संस्कृत के शिक्षक मित्रों की यह मान्यता कि भारत की सभी भाषाएं संस्कृत से उत्पन्न हुई। हैं – भाषा–विकास के आधुनिक सिद्धान्तों से मेल नहीं खाती। हिन्दी के विकास के इतिहास से भली प्रकार परिचित न होने, उसे एक स्वतंत्र भाषा न मानने व उसका संस्कृत से अनावश्यक घालमेल कर पढ़ाने से कुछ समस्याएं जरूर खड़ी हो सकती हैं। इसका असर सीखने पर भी पड़ना स्वाभाविक है। संस्कृत की अत्यधिक 'नियमबद्धता' को हिन्दी में ले आना हिन्दी सीखने को कठिन बना देता होगा।

भाषा शिक्षा बच्चों को भावों तथा विचारों से समृद्ध करती है। उन्हें जीवन के सौंदर्यात्मक पहलू को समझने की दृष्टि देती है। साहित्य, कला तथा संगीत के जीवन में महत्व को स्पष्ट करती है। उन्हें जीवन की विविधता को समझने और सराहने का अवसर देती है। उन्हें संवेदनापूर्ण तथा मानवीय बनाती है। प्रगतिशील, समानता पर आधारित लोकतांत्रिक समाज के निर्माण में योगदान देती है। लेकिन भाषा शिक्षा तभी यह सब कर सकेगी जब सभी भाषा शिक्षक इन सब चीजों को समझेंगे और मेरा विद्यालय प्रशासन उन्हें इन सब चीजों को बच्चों तक पहुंचाने में सहायता करेगा।

(लेखक राजकीय इंटर कॉलेज कालाढूंगी, नैनीताल में हिन्दी शिक्षक हैं।)

आसमान

आसमान में फैली लाली
और धरती पर बिखरा रंग।
फूल–फूल पर घूमे संग
खुशबू महके उसके संग।
हर तरफ फैली हरियाली
छायी कुछ यूं छटा निराली
पेड़ो पर चहकी चिड़ियां
झूमी डाली उनके संग।

– राजेश जोशी

राजकीय इंटर कॉलेज, कंवा, एटहाली, उत्तरकाशी